जिल और यादवः मोहब्बत का सफ़र

जिल लो

Jill Aur Yadav: Mohabbat Ka Safar

by Jill Lowe

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से

प्रकाशितः नवंबर 2005

भाषाः हिंदी

मुद्रणः पेंगुइन

मूल्यः रु 190.00

आई एस बी एनः 014400903

ऐडिशनः पेपर बैक

फ़ॉरमेटः बी

पृष्ठः 361 pp

वर्गीकरणः आत्म कथा

क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** November 2005
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 190. 00
- **Cover Price:** Rs. 190.00
- **ISBN:** 014400903
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 361pp
- **Classification:** Autobiography
- **Rights:** World

अंग्रेज़ी समाज के उच्च वर्ग में जन्मी जिल लो जब पहली बार भारत आईं, तब उनके दिमाग़ में इसका कोई ख़ास मक़सद नहीं था। कुछ समय दक्षिण भारत घूमने के बाद जिल दिल्ली आईं और किराए की एक टैक्सीलेकर उत्तर भारत के सफ़र पर निकलीं। इस सफ़र ने उनकी ज़िंदगी की दिशा ही बदल दी और तीन साल बाद कई माह साथ गुज़ारने के बाद जिल ने अपने इसी टैक्सी ड्राइवर सेविवाह कर लिया। जिल के पति यादव हरियाणा के एक विधुर हैं। गांव में उनका लंबा-चौड़ा किसान परिवार कच्चे फ़र्श पर बैठकर भोजन करता है, चारपाइयों पर सोता है और शौचादि के लिए खेतों में जाता है।

जिल और यादव का मिलन वैवाहिक संबंधों की कोमलता, उनके सुख-दुख व एक-दूसरे के प्रति उनकी वचनबद्धता की अद्भुत कहा नी है। अपने अत्यंत उन्मुक्त रोमांस के इस बेबाक, मगर गरिमापूर्ण संस्मरण में जिल ने अपने ब्रिटिश जीवन के अकेलेपन, भारत-यात्रा के रोमांच, विवाह की योजना के बनने-बिगड़ने और हिंदुस्तानी जीवनशैली में ख़ुद को ढालने की लंबी और जटिल यात्रा के बारे में विस्तृत और मर्मस्पर्शी ढंग से लिखा है।

लेखक परिचय

लंदन में जन्मी जिल लो की शिक्षा एक छोटे शहर के आवासीय विद्यालय (बोर्डिंग स्कूल) एवंइटली में विदेशियों के लिए बने पेरूजा विश्व विद्यालय में हुई। कई वर्षों तक ग्रेट ब्रिटेन में टूरिस्ट गाइड के रूप में कार्यरत रहने के पश्चात 1990 में वे पहली बार भारत की यात्रा पर आई थीं। यह उनकी प्रथम रचना है।

अनुवादक परिचय

परतंत्र भारत में स्वतंत्रता दिवस व रक्षाबंधन के दिन अजमेर, राजस्थान में जन्मी रक्षा शुक्ला की शिक्षा-दीक्षा उत्तर-प्रदेश के आगरा नगर में हुई। आजकल वे नोएडा में अपने परिवार के साथ रहतेहुए कविता, कहानी, उपन्यास–तीनों विधाओं में स्वतंत्र लेखन करती हैं। हिंदी व अंग्रेज़ी पर उनका समान अधिकार है। उपन्यास के अनुवाद का यह उनका प्रथम प्रयास है।